"प्राणी तू एको – "हरि जस मांगना""

1. मागना मागन नीका - हरि जस गुर ते मागना ।

अर्थः- हे भाई ! गुरु से परमात्मा की महिमा की खैर माँगना - ये अन्य सभी माँगों से उत्तम माँग है ।

चादना चादन आंगन - प्रभ जीउ अंतर चादना ।

अर्थः- (हे भाई ! लोग खुशी आदि के मौके पर घरों में दीए आदि जला के रौशनी करते हैं, पर मनुष्य के) हृदय में परमात्मा के नाम की रौशनी हो जाना - ये आँगन में अन्य सभी रौशनियों से उत्तम रौशनी है ।

आराधना अराधन नीका - हरि-हरि नाम अराधना ।

अर्थः- हे भाई ! सदा परमात्मा का ही नाम स्मरणा - ये अन्य सभी स्मरणों से बढ़िया स्मरण है ।

तिआगना तिआगन नीका - काम क्रोध लोभ तिआगना ।

अर्थः- (हे भाई ! माया के मोह में से निकलने के लिए लोग गृहस्थ त्याग जाते हैं, पर) काम-क्रोध-लोभ (आदि विकारों को हृदय में से) त्याग देना- ये अन्य सारे त्यागों में श्रेष्ठ त्याग है ।

जागना जागन नीका - हरि कीरतन मह जागना ।

अर्थः- (हे भाई ! देवी आदि की पूजा के लिए लोग जगराते करते हैं, पर) परमात्मा की महिमा महिमा में जागना - यह और सभी जगरातों से श्रेष्ठतम् जगराता है ।

लागना लागन नीका - गुर चरणी मन लागना ।

अर्थः- हे भाई ! गुरु के चरणों में मन का प्यार बन जाना- ये अन्य सभी लगी हुई लगनों में से उच्च दर्जे की लगन है ।

इह बिध तिसह परापते - जा कै मसतक भागना ।

अर्थः- पर, हे भाई ! ये जुगति उसी ही मनुष्य को प्राप्त होती है, जिसके माथे पर भाग्य जाग उठें ।

कह नानक तिस सभ किछ नीका - जो प्रभ की सरनागना ।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1018)

अर्थः- हे नानक ! कहः जो मनुष्य परमात्मा की शरण में आ जाता है, उसको हरेक सद्-गुण प्राप्त हो जाता है ।

a. सिख मत सभ बुध तुम्हारी - मंदिर छावा तेरे । तुझ बिन अवर न जाणा मेरे साहिबा - गुण गावा नित तेरे । (795)

अर्थः- हे मेरे मालिक-प्रभु ! सब जीवों के मन और शरीर तेरे ही रचे हुए हैं, शिक्षा, बुद्धि, समझ सभ जीवों को तुझसे ही मिलती है । तेरे बराबर का मैं किसी और को नहीं जानता । मैं नित्य तेरे ही गुण गाता हूँ ।

b. तू अथाह अपार अत ऊचा - कोई अवर न तेरी भाते । इह अरदास हमारी सुआमी - विसर नाही सुखदाते । (747)

अर्थः- हे प्रभु ! (तेरे दिल की) गहराई नहीं पाई जा सकती, तेरी हस्ती का परला छोर नहीं पाया जा सकता, तू बहुत ही ऊँचा है, कोई और तेरे जैसा नहीं है । हे मालिक! हे सुखों के देने वाले ! हम जीवों की (तेरे आगे) यही आरजू है, कि हमें तू कभी भी ना भूल ।

2. प्राणी एको नाम धिआवहु । अपनी पत सेती घर जावहु ।

अर्थः- हे प्राणी ! एक परमात्मा का ही नाम स्मरण कर । (नाम-जपने की इनायत से) तू आदर सहित प्रभु के चरणों में पहुँचेगा ।

खाणा पीणा हसणा सउणा - विसर गइआ है मरणा । खसम विसार खुआरी कीनी - धिग जीवण नही रहणा ।

अर्थः- सिर्फ खाने, पीने, हसने, सोने के आहर में रहने से (जीव को) मौत भूल जाती है, (मौत के भूलने से) प्रभु-पति को बिसार के जीव वह-वह काम करता रहता है जो इसकी ख्वारी (दुख) का कारण बनते हैं । (प्रभु को बिसार के) जीना धिक्कार-योग्य हो जाता है । सदा यहाँ किसी ने टिके नहीं रहना (फिर क्यों ना जीवन सदाचारी बनाया जाए?) ।

तुधनो सेवह तुझ किआ देवह - मांगह लेवह रहह नही । तू दाता जीआ सभना का - जीआ अंदर जीउ तुही ।

अर्थः- हे प्रभु ! जो लोग तुझे स्मरण करते हैं (तेरा तो कुछ नहीं सँवारते, क्योंकि) तुझे वे कुछ भी नहीं दे सकते (बल्कि तुझसे) माँगते ही माँगते हैं, और तुझसे नित्य दातें लेते ही रहते हैं, तेरे दर से माँगे बिना नहीं रह सकते । तू सारे जीवों को दातें देने वाला है, जीवों के शरीरों में जिंद भी तू खुद ही है ।

गुरमुख धिआवह स अम्रित पावह - सेई सूचे होही । अहिनिस नाम जपहु रे प्राणी - मैले हछे होही ।

अर्थः- जो लोग गुरु की शरण पड़ कर (प्रभु का नाम) जपते हैं, वे (आत्मिक जीवन देने वाला) नाम-अमृत हासिल करते हैं, वही सदाचारी जीवन वाले बन जाते हैं । (इसलिए) हे प्राणी ! दिन-रात परमात्मा का नाम जपो । बुरे आचरण वाले लोग भी (नाम जप के) अच्छे बन जाते हैं ।

जेही रुत काइआ सुख तेहा - तेहो जेही देही । नानक रुत सुहावी - साई बिन नावे रुत केही ।(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1254)

अर्थः- (मानवीय जीवन के लिए दो ही ऋतुएं हैं: स्मरण और नाम हीनता, इनमें से) जिस ऋतु के प्रभाव तले मनुष्य जीवन गुजारता है, इसके शरीर को वैसा ही सुख (अथवा दुख) मिलता है, उसी प्रभाव के मुताबिक ही इसका शरीर ढलता रहता है (इसकी ज्ञान-इंद्रिय ढलती रहती हैं)। हे नानक ! मनुष्य के लिए वही ऋतु अच्छी है (जब ये नाम स्मरण

करता है) । नाम स्मरण के बिना (कुदरति की बदलती कोई भी) ऋतु इसको लाभ नहीं दे सकती ।

a. प्रानी परम पुरख पग लागो । सोवत कहा मोह निंद्रा मै - कबहूं सुचित ह्वै जागो । (श्री दशम ग्रंथ - 709)

अर्थः- हे मनुष्य ! उस परम पुरुष के चरणों में गिरो, क्यों सांसारिक मोह में सो रहे हो, कभी तो जागकर सावधान हो जाओ ?

b. कहत कबीर सुनहु रे प्रानी - छोडहु मन के भरमा । केवल नाम जपहु रे प्रानी - परहु एक की सरनां । (692)

अर्थः- कबीर कहता है: हे भाई ! सुनो, मन के (ये) भुलेखे दूर कर दो (कि सदा यहीं बैठे रहना है) । हे जीव ! (और लालसाएं छोड़ के) सिर्फ प्रभु का नाम स्मरण करो, और उस एक की शरण आओ ।

c. प्राणी तूं आइआ लाहा लैण । लगा कित कुफकड़े - सभ मुकदी चली रैण । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 43)

अर्थः- हे प्राणी ! तू (जगत में परमात्मा के नाम का) लाभ लेने के लिए आया है । तू किस खुआरी वाले काम में उलझा हुआ है ? तेरी जिंदगी की सारी रात खत्म होती जा रही है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"